मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO Delhi on 10/11.07. 2022

Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA

वर्ष : 58 अंक 07 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
जुलाई 2022 बहाई वर्ष : 179

विश्व न्याय मन्दिर

प्रभुधर्म की संस्थाओं एवं एजेंसियों पर सेवा देना वास्तव में एक अतिबृहत् सौभाग्य है लेकिन वैसा नहीं जिसे प्राप्त करने की व्यक्ति द्वारा कोशिश की जाती है; यह एक ऐसा कर्तव्य और जिम्मेदारी है जिसे निभाने के लिये किसी भी समय उसका आह्वान किया जा सकता है। यह बात अवश्य ही समझ में आती है कि वे सभी लोग जो बहाई प्रशासन में संलग्न हैं, स्वाभाविक रूप से अनुभव करेंगे कि किसी भी रूप में, उन्हें एक ऐसे ढाँचे का हिस्सा बनने का विलक्षण सम्मान मिला है, जिसे वह माध्यम बनाया गया है जिसके द्वारा प्रभुधर्म की चेतना प्रवाहित होती है।

—28 दिसम्बर, 2010

मध्य प्रदेश की गतिविधियाँ

मध्य प्रदेश में श्यामपुर क्लस्टर के कॉलोनी मोहल्ले में पिछले कई महीनों से पायनियर के सहयोग से स्थानीय नाभिकों की क्षमता बढ़ाने हेतु नियमित रूप से अध्ययनवृत्त कक्षा का आयोजन किया जा रहा था, जिसमें मित्रों ने रूही संस्थान की पुस्तक क्रमांक 1 और 2 का अध्ययन समाप्त किया और अब यह मित्र मिलकर रूही पुस्तक—7 सेवा के पथ पर साथ—साथ चलना का गहन अध्ययन कर रहे हैं। अध्ययन के दौरान मित्रों ने पुस्तक क्रमांक—2 में दी गई महत्वपूर्ण अवधारणाओं के साथ—साथ बहाई नियम एवं कुछ प्रमुख सिद्धांतों के प्रति भी अपनी समझ को बढ़ाया।

कुछ स्थानीय अनुप्रेरकों द्वारा गांव के किशोरों के सशक्तिकरण हेतु किशोर कार्यक्रम को संचालित किया जाता है, जिसमें वह किशोर कार्यक्रम की प्रमुख पुस्तकों का अध्ययन एक आनंदमय वातावरण में कर रहे हैं और अपने जीवन के प्रति जागरूक होते हुए कई प्रकार की आदतों को विकसित कर रहे हैं। किशोरों द्वारा अब अपने व्यवहार में, पुस्तक से सीखी गई अवधारणों को प्रस्तुत किया जाने लगा है, जिसे देखकर उनके अभिभावकगण बहुत ही प्रसन्नता महसूस करते हैं।

कॉलोनी एरिया से स्थानीय नाभिकों के घरों में नियमित रूप से भक्तिपरक सभाओं का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें पूरा परिवार बैठकर आनंद और उल्लास के साथ कई प्रकार के विषयों पर परामर्श करते हैं, साथ मिलकर प्रार्थना का सस्वर पाठ, गीत—संगीत के माध्यम से भक्तिमय वातावरण निर्मित करने का कार्य करते हैं। इन प्रार्थना सभाओं में अब मित्रों के स्वयं के परिवार के साथ—साथ, पड़ोसी मित्र भी शामिल होने लगे हैं जिससे मित्रों के बीच प्रेम और एकता के बंधन मजबूत होने लगे हैं। यहां पर नियमित रूप से बच्चों की बहाई बाल नैतिक कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है जिसमें स्थानीय शिक्षक अपनी सेवा दे रहे हैं और गांव के बच्चों के सर्वांगीण विकास के प्रति चिन्तित होते हुये उनको भौतिक, मानवीय और आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने में पूर्ण सहयोग कर रहे हैं।



रूही पुस्तक का अध्ययन करते हुए प्रतिभागी

इस अंक में

झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ

• झारखण्ड के राँची, चंदनकियारी, पटमदा, पोटका, आदित्यपुर, करनडीह, गम्हरिया, चांडिल इत्यादि क्लस्टरों में 10 से 13 जून 2022 के अंतराल में क्रमशः 80, 200, 200, 100, 70, 50, 40, 100, मित्रों के साथ सम्मेलनों का आयोजन किया गया। उक्त सम्मेलनों का आयोजन स्थानीय मित्रों तथा संस्थाओं ने किया। इन सम्मेलनों की प्रकृति आध्यात्मिक थी जिसके माध्यम से जन समुदायों तक युगावतार बहाउल्लाह का संदेश पहुँचाना है। एक और प्रकृति जो इनके माध्यम से समुदायों में समर्पण एवं त्याग की भावना को प्रबलित करना, जिससे समुदाय आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से आगे बढ़ता रहे। इन सम्मेलनों में बच्चे, किशोर, युवा, वयस्क और वृद्ध सभी उम्र के मित्रों ने भाग लिया। सम्मेलनों के दौरान युवा एवं वयस्क मित्रों ने सम्मेलन हेतु तैयार विषय वस्तु का भी अध्ययन किया। कहीं पर एक दिवसीय तथा कहीं पर दो दिवसीय सम्मेलनों का आयोजन किया गया था। उक्त सम्मेलनों में हुए खर्चों में समुदाय तथा स्थानीय सभाओं ने बढ़—चढ़ कर हिस्सा लिया। सम्मेलनों में उपस्थित बच्चों और किशोरों के लिए अलग से शिक्षक एवं अनुप्रेरकों ने कक्षाओं का आयोजन कर उनकी बहाई कक्षाओं एवं उनकी स्कूली पढ़ाई में मदद की। सम्मेलन के वातावरण को मनोहर बनाने हेतु कला—कृतियों का भी खूब आनंद उठाया गया। बच्चों और किशोरों ने गीत—संगीत के माध्यम से अपनी सीखों एवं जन—जागरण का संदेश दिया। इन सम्मेलनों से समुदाय में एक अलग उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ है। शामिल हुए अब प्रत्येक बच्चे, किशोर तथा युवा हमारे कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं। अभिभावक स्वयं इस समुदाय निर्माण की प्रक्रिया को पहचान रहे हैं। समुदाय के प्रति उनके दृष्टिकोण, सोच और व्यवहार में एक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। उनकी हार्दिक इच्छा है कि उनके बच्चे भी इस कार्यक्रम से लाभ प्राप्त करें। बहाइयों द्वारा प्राप्त सौ वर्षों की उपलब्धियों पर आधारित तथा अब्दुल—बहा के यथार्थ जीवन पर केंद्रित फिल्मों को भी इन सम्मेलनों के दौरान दिखाने का पूरा प्रयास किया गया, जिसने उनके जीवन पर एक गहरा प्रभाव छोड़ा है। इस अवसर पर बच्चों और किशोरों में अपनी कला—कृतियों के माध्यम से समुदाय में बहाई कक्षाओं में सीखी गई सीख को बताने का प्रयास किया। सम्मेलन के पूर्व तैयारी हेतु स्थानीय मित्रों ने समुदाय में कुछ दिनों पूर्व आमंत्रण करना, सम्मेलन को आत्मनिर्भर बनाने हेतु मित्रों ने समुदाय के प्रत्येक परिवार में जाकर उन्हें इस सम्मेलनों के महत्व को



पोटका में आयोजित सम्मेलन के प्रतिभागी

शेष पृष्ठ 3 पर

अग्रदूत दिव्यात्मा बाब की शहादत का रहस्य

'बाब' का अर्थ है द्वार। महात्मा बाब एक नये राज्य (पृथ्वी पर प्रभु के राज्य) के द्वार थे।

महात्मा बाब का जन्मस्थान दक्षिण ईरान का सुन्दर नगर शीराज़ था। वे अली मोहम्मद कहलाते थे तथा स्वयं ईश्वरावतार हज़रत मोहम्मद के वंशज थे। उनके जन्म के कुछ समय पश्चात् ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। अतः उन्हें उनके मामा की देखरेख में रखा गया। बाल्यावस्था में उनको एक शिक्षक के पास भेजा गया जो कुरान तथा प्राथमिक विषय पढ़ाता था। परन्तु बाल्यावस्था से ही महात्मा बाब अन्य बालकों से भिन्न थे। वे सदा कठिन प्रश्न पूछते तथा स्वयं ही इस प्रकार उन प्रश्नों का उत्तर देते कि बड़े बूढ़े भी सुनकर दंग रह जाते। जब दूसरे बालक प्रायः खेलकूद में व्यस्त होते तो वे किसी वृक्ष की छाया में या किसी और एकान्त स्थान पर प्रार्थना में मग्न मिलते।

जब महात्मा बाब ने ईश्वरावतार के रूप में अपनी वास्तविकता प्रकट की तो तत्पश्चात् उनके मामा तथा शिक्षक दोनों ने ही उनमें विश्वास कर लिया क्योंकि वे उनको बचपन से जानते थे और उन्होंने उनमें तथा अन्य बालकों में भिन्नता का अवलोकन कर लिया था। उनके मामा बाद में उस प्रभुधर्म के लिए शहीद हो गए जो उनके भानजे महात्मा बाब द्वारा प्रकट हुआ था।

महात्मा बाब अभी नवयुवक ही थे जब उन्होंने लोगों को उस संदेश के बारे में बताया जो प्रभु ने उनको दिया था उनकी आयु उस समय केवल 25 वर्ष की थी। महात्मा बाब द्वारा ईश्वर के सन्देशवाहक के रूप में अपने मिशन की घोषणा से पूर्व दो ऐसे प्रसिद्ध शिक्षक थे, जिन्होंने कहा था कि कुरान तथा पवित्र परम्पराओं के अनुसार इस्लाम के प्रतीक्षित अवतार शीघ्र ही प्रकट होंगे। ये दो शिक्षक थे शेख अहमद तथा उनका प्रमुख शिष्य सैय्यद काज़िम। क्योंकि वे सन्त तथा अत्यन्त ज्ञानी पुरुष थे इसलिए बहुत से लोगों ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया और अपेक्षित अवतार का स्वागत करने के लिए उन्होंने स्वयम् को तैयार कर लिया।

सैय्यद काज़िम के स्वर्गवास के बाद उनके अनुयायी अपेक्षित अवतार की खोज में भिन्न–भिन्न दिशाओं में फैल गये। उनमें से मुल्ला हुसैन नामक एक विद्वान तथा धर्मात्मा नवयुवक के नेतृत्व में कुछ लोगों ने 40 दिनों तक व्रत तथा प्रार्थना में बिताने के बाद शीराज़ की ओर प्रस्थान कर दिया।

उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिल गया। शीराज़ के द्वार के समीप मुल्ला हुसैन की भेंट एक दीप्तिमान नवयुवक से हुई जो उनके स्वागत के लिए आया था। वह नवयुवक और कोई नहीं स्वयं महात्मा बाब ही थे।

उन्होंने मुल्ला हुसैन को अपने घर पर आमंत्रित किया और वहाँ पर 23 मई सन् 1844 को महात्मा बाब ने स्वयम् को अपेक्षित अवतार के रूप में प्रकट कर दिया।

शीराज़ के द्वार से बाहर महात्मा बाब पर दृष्टि डालते ही मुल्ला हुसैन का हृदय उनकी ओर खिंच गया था परन्तु अब जबकि उनके आतिथ्य ने यह महान घोषणा की तो उन्होंने कोई प्रमाण माँगा ताकि वह जान सके कि महात्मा बाब ही वे अपेक्षित अवतार हैं। महात्मा बाब ने कहा कि किसी प्रभु अवतार द्वारा प्रकट किये गये दैवी श्लोकों से बड़ा दूसरा प्रमाण नहीं हैं। तब कलम और कागज उठाकर उन्होंने अपना पहला पावन लेख लिखा। हालांकि बाल्यवस्था में थोड़े से समय के अतिरिक्त उन्होंने किसी पाठशाला में कभी प्रवेश नहीं लिया था फिर ईश्वर के सभी अवतारों की तरह महात्मा बाब को भी वह गूढ़ ज्ञान प्राप्त था जो ईश्वर का उपहार था। उन्होंने बड़ी तेज़ी के साथ लिखा और लिखने के साथ–साथ उन श्लोकों का धीमे तथा मीठे स्वर में उच्चारण किया। मुल्ला हुसैन को किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। अश्रुपूर्ण नेत्रों के साथ वे ईश्वरावतार के सामने झुक गये।

मुल्ला हुसैन महात्मा बाब के पहले अनुयायी थे। महात्मा बाब ने उनको "बाब–उल्–बाब" अर्थात "द्वार का द्वार" का उपनाम प्रदान किया। वह रात एक नये युग की उषा थी। बहाई पंचांग इसी वर्ष से आरम्भ होता है।

महात्मा बाब का सन्देश सर्वप्रथम ईरान के लोगों को प्राप्त हुआ। परन्तु अन्य देशों के मुसलमान अभी तक यह नहीं जानते थे कि उनका अपेक्षित अवतार आ गया है। इसलिए जब भिन्न–भिन्न देशों से हज़ारों मुसलमान तीर्थ यात्रा के लिए मक्का में एकत्रित हुए तो महात्मा बाब भी इस्लाम के इस पवित्र स्थान पर पहुँचे और वहाँ पर एकत्रित लोगों में उन्होंने घोषणा की कि उनकी आराधना का लक्ष्य प्रकट हो गया है और वे ही उनके प्रतिक्षित अवतार हैं। किसी ने भी उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, परन्तु 'बाब' अपनी घोषणा पूरी कर चुके थे।

जब महात्मा बाब अपनी मातृ–भूमि में लौट रहे थे कि सिपाहियों के उस दस्ते से उनकी भेंट हुई जो उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आया था। क्योंकि कट्टरवादी मुल्ला नहीं चाहते थे कि उस नए धर्म का प्रसार हो। मुल्लाओं ने हर प्रकार से ईश्वर के उस प्रकाश को बुझाने का प्रयत्न किया जो पवित्रात्मा बाब के वक्षस्थल में प्रदीप्त हो रहा था। उस दिन से महात्मा बाब को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। घोषणा के पश्चात् महात्मा बाब का अल्प परन्तु दैदीप्यमान जीवन अधिकतर कैदखाने में व्यतीत हुआ। दो बार उनको अत्यन्त ठंडे तथा कठिन पहाड़ी कैदखाने में भेजा गया। परन्तु कोई जंजीर अथवा कैद प्रभु की वाणी को फैलने से कभी रोक नहीं सकी। जब महात्मा बाब कैदखाने में थे तो उनके वफादार अनुयायियों ने उनके सन्देश को सारे देश में फैला दिया और उस थोड़े से समय में हजारों व्यक्तियों ने उनके धर्म के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

महात्मा बाब अभी 31 वर्ष के युवक ही थे जब उन्होंने उनकी हत्या करने का निश्चय किया। महात्मा बाब जानते थे कि परमात्मा की राह में उनको शहीद किया जाएगा। वे अपनी जान देने में भी प्रसन्न थे ताकि संसार के लोग अपने जीवन का अभिप्राय समझ सकें और ईश्वर तथा उसके अनन्त राज्य की ओर मुख मोड़ें। 9 जुलाई सन् 1850 ई0 उनके बलिदान का दिन निर्धारित था। प्रातःकाल के समय वह अफसर, जिसको महात्मा बाब को प्राणदण्ड देने का जिम्मेदार बनाया गया था, उनके पास जेल में आया। महात्मा बाब उस समय अपने एक अनुयायी के साथ बातचीत कर रहे थे जो उनकी अन्तिम आज्ञायें लिखता जा रहा था। अफसर ने महात्मा बाब से कहा कि उनको प्राणदण्ड देने का समय हो गया है और सैनिक आज्ञा–पालन के लिए मैदान में तैयार खड़े हैं। महात्मा बाब ने कहा कि उन्हें अपने शिष्य के साथ अभी बातचीत पूरी करनी है परन्तु वह अफसर हँसने लगा और बोला कि एक कैदी अपनी मनमानी नहीं कर सकता। जब महात्मा बाब को ले जाया जा रहा था तो उन्होंने कहा कि जब तक इस संसार में उनका मनोरथ पूरा नहीं हो जाता और वे अपनी बातचीत पूरी नहीं कर लेते तब तक पृथ्वी की कोई भी शक्ति उनको हानि नहीं पहुँचा सकती। अफसर ने महात्मा बाब की बात पर ध्यान नहीं दिया और उन्हें चौक में ले आया। उस समय महात्मा बाब का एक नवयुवक शिष्य, जिसका नाम मोहम्मद अली जनूजी था, भाग कर उनके पास पहुँचा और अपने प्रिय स्वामी के पाँव पकड़कर याचना करने लगा कि उसे भी उनके साथ मरने की अनुमति दी जाये। अफसर ने उसे परे धकेलने का प्रयत्न किया परन्तु मोहम्मद अली जनूजी रोता रहा और उससे इतनी दीन याचना की कि अफसर को उसे भी साथ लेना पड़ा।

चौक में जहाँ पर सैनिक महात्मा बाब को गोली का निशाना बनाने की प्रतीक्षा में थे, लोगों की अपार भीड़ जमा हो गई। उन सबने देखा कि महात्मा बाब तथा उनके प्रिय शिष्य को इस प्रकार बाँधा गया है कि उसका सिर अपने प्रियतम की छाती पर था। फिर वह महान क्षण आया। ढोल पीटे गये। तुरहियाँ बजाई गईं ज्यों ही तुरहियों की आवाज़ बन्द हुई, यह भयंकर आज्ञा सुनी गई "गोली चला दो।" निशाना साधे हुए सैकड़ों सैनिकों ने गोलियाँ चला दीं। धुएँ का एक विशाल बादल उस पूरे स्थान पर छा गया। सारा वातावरण बारूद की गंध से भर गया। कुछ समय पश्चात् जब धुआँ साफ हो गया तो बड़े अचम्भे की बात देखने में आई। महात्मा बाब वहाँ कहीं नहीं नज़र आ रहे थे और उनका वफादार शिष्य बिना किसी हानि के वहाँ खड़ा था। सभी हैरान थे। बहुत से लोगों ने कहा कि चमत्कार हुआ है तथा महात्मा बाब स्वर्ग को प्रस्थान कर गये हैं। गोली चलाने वाली टुकड़ी तथा उनके नायक ने ऐसी असाधारण घटना पहले कभी नहीं देखी थी। महात्मा बाब को ढूँढ़ने के लिए प्रत्येक दिशा में अधिकारियों को भेजा गया। उसी अफसर ने, जो महात्मा बाब को जेल की कोठरी से लाया था, उन्हें धैर्यपूर्वक उसी स्थान पर अपनी वह बातचीत समाप्त करते हुये पाया जिसमें विघ्न डाला गया था। महात्मा बाब उस अफसर की ओर मुड़े और मुस्कुराते हुए बोले कि पृथ्वी पर अब उनका पवित्र मनोरथ पूरा हो चुका है और वे अपने प्रयोजन की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए अपना बलिदान देने के लिए तैयार हैं।

महात्मा बाब को एक बार फिर चौक में ले जाया गया परन्तु इस बार गोली चलाने वाली टुकड़ी के नायक ने उनकी हत्या में भाग लेने से इन्कार कर दिया। वह अपने सैनिकों को चौक से बाहर ले आया और उसने शपथ ले ली कि चाहे जो भी हो वह ऐसे निर्दोष धर्मात्मा युवक के रक्त से अपने हाथ कभी नहीं रंगेगा। मृत्युदण्ड के आदेश को पूरा करने के लिए सैनिकों की एक दूसरी टुकड़ी को बुलाया गया जब टुकड़ी गोली दागने के लिये तैयार हुई तब बाब ने भौचक्का देख रही हजारों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा था :–

"ओ दिग्भ्रमित लोगों ! यदि तुमने मुझ पर विश्वास किया होता तो तुममें से प्रत्येक ने तुम सब से अधिक ऊँचा स्थान रखने वाले इस युवक द्वारा प्रस्तुत किये गये उदाहरण का अनुसरण किया होता और स्वेच्छा से मेरी राह में अपना बलिदान कर दिया होता। वह दिन आयेगा जब तुम मुझे पहचानोगे, लेकिन उस दिन मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।"

इस बार सैकड़ों गोलियों ने महात्मा बाब तथा उनके वफादार शिष्य के शरीर को छलनी कर दिया। उनके सुन्दर मुख पर, जिस पर गोलियों के निशान नहीं पड़े थे, अब भी सुन्दर मुस्कान छाई हुई थी जिससे एक ऐसी महान आत्मा की शान्ति तथा प्रसन्नता प्रकट हो रही थी, जिसने मानव मात्र के लिये एक नये युग की घोषणा के हेतु अपने जीवन का बलिदान कर दिया था।

मार्च 2022 तक मूल–गतिविधियों के सांख्यिकी आंकड़े

क्षेत्रीय/राज्य बहाई परिषद	भक्तिपरक बैठकों की संख्या	भक्तिपरक बैठकों में उपस्थिति	बच्चों की बहाई कक्षाओं की संख्या	बच्चों की बहाई कक्षाओं में उपस्थिति	किशोर समूहों की संख्या	किशोर समूहों में उपस्थिति	स्टडी सर्कल की संख्या	स्टडी सर्कल में उपस्थिति	कुल मूल गतिविधियां	मूल गतिविधियों में कुल उपस्थिति
आंध्र प्रदेश+	452	1572	56	335	36	200	25	79	569	2186
असम+	1481	5143	91	577	46	271	26	124	1644	6115
बिहार	19502	139231	1489	13270	1055	9058	420	3453	22466	165012
छत्तीसगढ़	990	5513	84	729	57	454	25	159	1156	6855
गुजरात	2654	10914	179	1724	122	881	95	754	3050	14273
झारखण्ड	3712	19540	350	2449	210	1400	132	958	4404	24347
कर्नाटक	55	234	10	42	18	116	20	53	103	445
केरल	584	2237	44	239	15	64	16	50	659	2590
मध्य प्रदेश	671	5675	107	1135	87	810	58	412	923	8032
महाराष्ट्र+	25355	119647	962	10098	828	7819	219	1430	27364	138994
मणिपुर+	355	1284	41	270	23	142	33	110	452	1806
ओडिशा	2380	9466	152	1012	89	500	64	218	2685	11196
पंजाब+	1588	7824	87	647	85	693	33	298	1793	9462
राजस्थान	757	3886	91	736	63	339	44	213	955	5174
सिक्किम+	1214	3711	152	934	84	395	122	502	1572	5542
तमिलनाडु+	9982	39396	574	4246	458	2788	469	1931	11483	48361
त्रिपुरा	2630	15649	170	1201	110	641	171	555	3081	18046
उत्तर प्रदेश+	84901	647488	5422	40815	3557	25983	1898	15523	95778	729809
पश्चिम बंगाल	27270	146928	2603	18590	1906	12561	1459	7033	33238	185112
कुल	**186533**	**1185338**	**12664**	**99049**	**8849**	**65115**	**5329**	**33855**	**213375**	**1383357**

झारखण्ड में आयोजित गतिविधियाँ

पृष्ठ 1 का शेष

बताते हुए सहयोग करने हेतु प्रेरित किया, जिसका परिणाम रहा की सम्मेलन में होने वाले खर्चों में 60 प्रतिशत की भागीदारी समुदाय की ओर से रही। स्थानीय आध्यात्मिक सभा, शिक्षण समिति जैसी सक्रिय संस्थाओं एवं एजेंसियों ने इस पूरे सम्मेलन में अपनी सक्रिय भूमिका को निभाते हुए सम्मेलनों को फलीभूत बनाया। समुदाय के गणमान्य लोगों ने भी इस सम्मेलन में भाग लेकर इसे महत्वपूर्ण बनाते हुए बहाइयों द्वारा समुदाय की बेहतरी हेतु किये जा रहे कार्यों को निर्णायक एवं अति अत्यावश्यक बताया। वर्तमान समय तक राज्य में छोटे–बड़े लगभग 43 सम्मेलनों का आयोजन किया गया है, जिनमें कुल लगभग 6000 मित्र शामिल हुए हैं, जो 14 क्लस्टरों के 18 समुदायों में हुए हैं।

• जमशेदपुर स्थित बहाई केंद्र में किशोर कार्यक्रम से संबंधित तीन दिवसीय अध्ययन एवं भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्रारंभिक संवेग रूही पुस्तक–5 की प्रथम शाखा की पहली ईकाई समीक्षा के पल नामक पुस्तक का अध्ययन किया गया। उक्त बैठक में जमशेदपुर से किशोर कार्यक्रम के 4 संयोजक, 3 उप–क्षेत्रीय संयोजक, 3 अनुप्रेरक तथा लर्निंग साईट से दो मित्रों सहित लगभग 12 मित्र उपस्थित हुए। उक्त बैठक में मित्रों ने पुस्तक के माध्यम से कई अवधारणाओं को आत्मसात करते हुए उन पर गहन परामर्श किया। उन्होंने परामर्श किया कि कैसे तीन वर्षों तक किशोर समूह को बनाये रखा जाए, किशोर समूह से समुदायों में क्या प्रभाव तथा क्या परिवर्तन देखने को मिल रहा है, किशोर पुस्तक से संबंधित अवधारणाओं की गहरी समझ किशोरों तथा अनुप्रेरकों में विकसित करना, इत्यादि जैसे बहुमूल्य विषयों पर परामर्श किया। समीक्षा के पल नामक पुस्तिका में कुल 19 भाग हैं, जो पूर्णतः संपुष्टि की अवधारणा पर आधारित हैं जो इस अवधारणा को स्पष्ट तरीके से समझने में मदद करती है। मित्रों ने अध्ययन के दौरान राज्य/क्लस्टर में संचालित की जा रही किशोर समूह की समीक्षा करते हुए उनसे संबंधित अभी तक के अनुभव को भी साझा किया कि कैसे किशोरों के माता–पिताओं के साथ वार्तालाप की जा रही है तथा समूहों में किस प्रकार के परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। उपस्थित अनुप्रेरकों ने भी अपने समूहों के अनुभव को साझा किया। अध्ययन के दौरान गीत–संगीत का भी खूब आनंद उठाया गया। अंतिम दिन 18 जून को बिरसानगर समुदाय में लगभग 5 घरों में भ्रमण किया गया, जिनसे किशोर, किशोर समूह में आते हैं। उक्त परिवारों में जाकर उनके बच्चों में हो रहे परिवर्तनों एवं उनकी सीखों पर परामर्श किया गया। अभिभावकों ने बताया कि उनमें जो एक परिवर्तन देखने को मिला वह बहुत खास है कि किसी भी कार्य से पूर्व अब वे सोचते हैं, समझते हैं और परामर्श करते हैं। उनकी बातों में अर्थपूर्णता, विनम्रता दिखाई देती है, जो किशोर कार्यक्रम का ही प्रभाव है।



तमाड़ में पुस्तक अध्ययन करते हुए मित्रगण



किशोरों के अभिभावकों से वार्तालाप करते हुए संयोजक

निवेदन

प्रिय मित्रों,

अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें बहाई समाचार में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2021-22-23

अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी के अवसर पर कहानी जो अब्दुल बहा ने कही

सफलता का रहस्य – सत्यवादिता

सत्यवादिता के बिना किसी भी आत्मा के लिए ईश्वर के किसी लोक में प्रगति असम्भव है।

–अब्दुल–बहा

ऐसा इतिहास है कि नादिरशाह ने यह माँग की कि बग़दाद के राज्यपाल को अपना शहर उसे समर्पित कर देना चाहिए। चूँकि राज्यपाल सैन्य रूप से मजबूत नहीं था, वह राजी हो गया कि एक विशेष समय वह बग़दाद ईरान को दे देगा। जब नादिरशाह बग़दाद की ओर बढ़ रहा था तब 8000 के करीब सैनिक उस्मान पाशा के नेतृत्व में राज्यपाल की सहायता के लिए इस्ताम्बुल से बगदाद शहर पहुँच गये।

अन्ततः राज्यपाल अपने वादे से मुकर गया, जिसके फलस्वरूप होने वाले युद्ध में नादिरशाह को बहुत बड़ी मात खानी पड़ी और उसे भागकर पहाड़ों में शरण लेनी पड़ी। वहाँ उसने अपने सचिव को बुलाकर मुख्यालय के लिए पत्र लिखवाया, "हमें मुँह की खानी पड़ी और अनेक सैनिक घायल हो गये, कई मारे गये और बंधक बना लिए गए। हम यहाँ हथियारों और सैनिकों के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

लेकिन सचिव ने इसकी जगह पत्र में लिखा "ईश्वर की अनुकम्पा से हमने अरबों की सेना को खदेड़ दिया, हजारों दुश्मनों को मार गिराया और घायल कर दिया तथा युद्धबंदी बना लिया है। हमने शत्रुओं का पूरी तरह नाश कर दिया। अब हम दूसरे क्षेत्रों पर भी आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं और हथियारों तथा सैनिक टुकड़ियों की प्रतीक्षा में हैं।"

इसे पढ़कर नादिरशाह बहुत ही क्रोधित हो गया और सचिव से उसने कहा, "मैं जैसा कहता हूँ ठीक वैसा ही लिखो। लिखो कि उनके सैनिकों से हमारे सैनिक संख्या में कम थे। इतना ही नहीं 8000 के करीब सैनिक उनकी सहायता के लिए पहुँच गये। अतः उन लोगों ने अपने वादे के अनुसार शहर को समर्पित करने से इंकार कर दिया और युद्ध किया और हमें हरा दिया। हमारे अनेक लोग मारे गये, कई घायल हुए और युद्धबंदी बना लिये गये। अतः हम इस पर्वत की तलहटी में शरण लिए हुए हैं और इंतजार कर रहे हैं कि कब सर्दियों का मौसम बीते और बसंत में हम दूसरी बार उन पर आक्रमण करें। यदि ईश्वर की इच्छा होगी तो हमें विजय मिलेगी।"

भाग्यवश ऐसा ही हुआ। बसंत आते ही उन्होंने आक्रमण किया और विजयी हुए। तब नादिरशाह ने अपने सचिव से कहा, "यदि मैंने सच को छिपा लिया होता और झूठ बोल दिया होता तब किसी ने भी हमारी इस बार की विजय पर विश्वास नहीं किया होता।"

अब्दुल–बहा ने अपने पास उपस्थित लोगों से कहा कि झूठ बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है।

गुरुग्राम की कुछ झलक



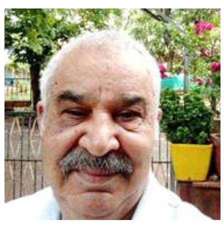
हरियाणा के गुरुग्राम की स्थानीय आध्यात्मिक सभा ने 25 जून, 2022 को निगम पार्षद नवीन दहिया के साथ एक भेंटवार्ता की। बहाई मित्रों ने पार्षद को प्रभुधर्म के विषय में बताया और समुदाय में किए जा रहे कार्यों से अवगत कराया, जिसे सुनकर उन्होंने बहाई मित्रों द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। पार्षद ने सूरत नगर के सामुदायिक केन्द्र को भी बहाई गतिविधियों के लिए उपयोग करने की अनुमति प्रदान की। स्थानीय सभा ने बहाई उपासना मंदिर का प्रतीक चिह्न उन्हें उपहार स्वरूप प्रदान किया।



गुरुग्राम के एक बहाई मित्र के विद्यालय में सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों और किशोरों ने भाग लिया। बच्चों को प्रार्थनाएँ सिखाई गईं और किशोरों के साथ लर्निंग साइड द्वारा तैयार सामग्री का अध्ययन किया गया। बच्चों को बताया गया कि हमारा इस धरती पर आने का उद्देश्य क्या है। हमें अपने जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है।

● निधन

श्री एच. एन. बी. जलाल



हमें यह बताते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि महाराष्ट्र में कोल्हापुर के श्री एच. एन. बी. जलाल का 27 जून, 2022 को निधन हो गया। श्री जलाल ने प्रभुधर्म में अनेक रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उनकी समर्पित सेवाओं को सदैव याद रखा जाएगा। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2021-22-23
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO Delhi on 10/11.07.2022
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)